रिकार्ड:-भोलेनाथ से निराला:- ओमशान्ति प्रातः क्लास 14-12-6

ओमशान्ति। अब गीत सुनने की कोई जरूरत नहीं रहती। गीत अक्सर कर के भक्त ही गाते हैं। और सुनते हैं। तुम तो पढ़ाई पढ़ते हो। यह गीत भी आस्ते2 कम कर देंगें। हैं बहुत अच्छी। बच्चों के लिए ही खास निकली हुई हैं। बच्चे जानते हैं बाप हमारी तकदीर ऊंची बना रहे हैं। अब हमको बाप को ही याद करना हैं। और देवी गुण भी धारण करनी हैं। अपना पोतामेल भी देखना हैं जमा होती हैं य ना ई ही होती रहती हैं। हमारे में कोई खामी तो नहीं हैं। अगर खामी हैं जिस से हमारी तकदीर में घाटा पड़ जावेगा तो उसको निकाल देना चाहिए। इस समय हरेक को अपनी तकदीर ऊंची बनानी हैं। तुम समझते हो हम यह (ल०ना०) बन सकते हैं अगर सिवाय एक बाप के और कोई को याद न करेंगे तो। कोई से बात करते, देखते हुये बुधि का योग बाप के साथ लगा रहे। हम आत्माओं को बाप को ही याद करना हैं। बाप का फरमान मिला हुआ हैं सिवाय मेरे और कोई से दिल न लगाओ। और देवी गुण भी धारण करो। बाप समझाते रहते हैं तुम्हारे अब 84 जन्म पूरे हुये हैं। अब तुम जाकर पहला नम्बर लो राजाई में। ऐसा न हो राजाई से गिर कर प्रजा में चले जाओ। प्रजा में भी नीचे चले जाओ। नहीं। अपनी जांच करते रहो। यह समझानी तो बाप बिगर कोई दे न सके। बाप को टीचर को याद करने सेडर रहेंगा ऐसा न हो हमको कोई सज़ा मिल जावे। भक्तिमार्ग में भी समझते हैं हम पाप-कर्म करने प्र सज़ा के भागी बन जावेंगे। बड़े बाबा की डायरेक्शन तो अभी ही मिलती हैं। जिसको श्रीमत कहते हैं। बच्चे जानते हैं हम श्रीमत से श्रेष्ठ बनते हैं। अपनी जांच करनी हैं कहां हम श्रीमत के बरखिलाफ तो कुछ नहीं करते हैं। जो बात अच्छी न लगे वह करनी न चाहिए। अच्छे बुरे को अब समझते हो। आगे नहीं समझते थे। अभी तुम ऐसे कर्म सिखते हो जो फिर 2। जन्म कर्म अकर्म बन जाता हैं। इस समय तो सब में 5 भूत प्रवेश हैं। अब अच्छी रीत पुरूषार्थ कर कर्मातीत बनना हैं। देवीगुण भी धारण करनी हैं। समय नाजुक होता जाता हैं। दुनिया बिगरती जाती हैं। दिन-पति दिन बिगरती ही रहेंगी। इस दुनिया से तुम्हारा कोई कनेक्शन ही नहीं हैं। तुम्हारा कनेक्शन हैं नई दुनिया से जो स्थापन हो रही हैं। तुम जानते हो हम नीमित बनते हैं नई दुनिया स्थापन करते। तो जो एमआबजेक्ट सामने हैं उन जैसा बनना हैं। कोई भी आसुरी गुण अन्दर न हो। रूहानी सर्विस में लग रहने से उन्नति बहुत होती हैं। प्रदर्शनी म्युजियम आद बनाते हैं समझते हैंबहुत लोगें आवेंगे, उन्हों को बाप का परिचयदेंगे। फिर यह भी बाप को याद करने लग पड़ेंगे। सारा दिन यही ख्यालात चलती हैं सेन्टर खोल सर्विस को बढ़ावें। यह रत्न भी तुम्हारे पास हैं। बाप देवीगुण भी धारण कराते हैं और खज़ाना भी देते हैं। तुम जो बैठे हो, तुम्हारी बुधि में हैं हम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानते हैं। पवित्र भी रहते हैं। मन्सा, बाचा, कर्मणा कोई भी बुरा कर्म न हो। इसकी पूरी जांच करनी हैं। बाप आये ही पतितों को पावन बनाने। इसके लिए युक्तियां भी बतलाते ही रहते हैं। इस में ही रमण करते रहना हैं। सेन्टर खोल बहुतों को निमंत्रण देना हैं। प्रेम से बैठ समझाना हैं। यह पुरानी दुनिया खतम होनी है। पहले तो नई दुनिया की स्थापना बहुत जरूरी हैं। स्थापना होती ही है संगम पर। यह भी मनुष्यों को पता नहीं है कि अभी संगम युग हैं। यह भी समझाना है। नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश इसका अब संगम हैं। नई दुनिया कैसी की स्थापना अब श्रीमत पर हो रही है। सिवाय बाप के और कोई नई दुनिया स्थापन की मत देंगे ही नहीं। बाप ही आकर नई दुनिया का उदघाटन कराते हैं। अकेले तो नहीं करेंगे। सभी बच्चों की मदद लेते हैं। वह लोग उदघाटने करने लिए मदद नहीं लेंगे। आकर कैंची से काटेंगे। यहां तो वह बात नहीं। इस में तुम सब ब्राह्मणकुल भुषण मददगार बनते हो। सभी मनुष्य मात्र रास्ता बिलकुल भूले हुये हैं। पतित दुनिया को पावन बनाना यह बाप का ही काम हैं। बाप ही नई दुनियाकी स्थापना करते हैं। जिसके लिए रूहानी नालेज देते हैं। तुम जानते हो बाप के पास नई दुनिया की स्थापना करने की युक्ति हैं। भक्ति मार्ग में भी उनको पुकारते हैं ना हे पतित-पावन आओ। भल शिव की पूजा भी करते रहते हैं परन्तु यह जानते नहीं कि पतित-पावन

कौन हैं। दुःख में याद तो करते हैं ना। हे भगवान, हे राम। राम भी निराकार भगवान को ही कहते हैं। निराकार ही ऊंच ते ऊंच भगवान हैं। परन्तु मनुष्य बहुत मुंझे हुये हैं। जैसे कि जंगल में जाकर पड़े हैं। उन से अब बच्चों को निकालना हैं। तुम जानते हो पहले हम भी मुंझे हुये थे, बाप ने आकर निकाला हैं। जैसे फगी में मनुष्य मुंझ जाते हैं ना। यह तो है बेहद की बात। बहुत बड़े जंगल में जाकर पड़े हैं। जैसे कि जंगली जनावर वन पड़े हैं। तुमको भी बाप ने फील कराया हैं हम किस जंगल में पड़े थे। यह भी अब पता पड़ा हैं। यह पुरानी दुनिया है इनका भी अब अन्त हैं। मनुष्य तो बिलकुल रास्ता जानते ही नहीं। बाप को पुकारते रहते हे। तुम अभी पुकारते नहीं हो। तुमको बाप ने भक्ति मार्ग से छुड़ा दिया हैं। भक्ति का जैसे जंगल हैं। अनेक रास्ता बताते रहते हैं मनुष्यों को। परन्तु सही रास्ता किसको भी मिलता नहीं हैं। अभी तुम बच्चे ड्रामा के आदि मध्य अन्त को जानते हो। सो भी नम्बरवार। जो जानते हैं वह बहुत खुशी में रहते हैं। औरों को रास्ता बताने में तत्पर रहते हैं। बाप तो कहते रहते हैं बड़े2 सेन्टर्स खोलो। चित्र अच्छे बड़े2 होंगी तो मनुष्य सहज ही समझ जावेंगे। बच्चों के लिए मैप्स जरूर चाहिए। बताना चाहिए यह भी स्कूल हैं। यहां की यह वन्डर फुल मैपस(चित्र) हैं। उस स्कूल के नक्शे में तो होती हैं हद की बातें। यह हैं बेहद की बातें। यह भी पाठशाला हैं। जिसमें बाप हमको सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज़ बता कर और तुम बच्चों को लायक बनाते हैं मनुष्य से देवता बनाने। यह हैं ईश्वरीय पाठशाला। लिखा हुआ भी हैं ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। यह हैं रूहानी पाठशाला। सिर्फ ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से भी मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। युनिवर्सिटी भी लिखना चाहिए। ऐसा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय कोई हैं नहीं। बाबा ने कार्डस देखी थी । कुछ अक्षर भूले हुये थे। बाबा ने कहा हैं प्रजापिता अक्षर जरूर डालो। फिर भी बच्चे भूल जाते हैं। लिखत पूरी होनी चाहिए। जो मनुष्यों को मालूम पड़े कि यह ईश्वरीय नालेज हैं। बच्चे जो सर्विस पर उपस्थित हों, जो अच्छे सर्विस-एबुल हैं उन्हों को यह दिल में रहता हैं हम फलाने सेन्टर को जाकर उठावें। ठंढा पर गया हैं उनको जाकर जगावें। क्योंकि माया ऐसी हैं जाक घड़ी2 सुलाये देती हैं। मैं स्वदर्शनचक्रधारी हूं यह भी भूल जाते हैं। माया बहुत आपोज़िशन करती हैं। तुम युध के मैदान में हो। माया माथा मूड़ कर उल्टा तरफ न ले जावे इसके लिए सम्भाल रखनी हैं। माया के तूफान तो सब को लगती हैं। छोटे या बड़े सब युध के मैदान में हो। पहलवान को माया के तूफान हिला न के। वह अवस्था भ आने वाली हैं। बाप समझाते रहते हैं समय बड़ा खराब हैं। हालत ि ो हुई हैं। राजाई तो सब खतम हो जानी हैं। सब को उतार देंगे। फिर प्रजा का प्रजा पर राज्य होगा। कौड़व राज्य सारी दुनिया में हो जावेगा। तुम अपनी नई राजधानी स्थापन करते हो तो यहां राजाई का नाम भी खतम हो जवेगा। आगे तो सुनते थे रशिया से ज़ार आता है चढ़ाई करेंगे तोडर जाते थे। अभी तो राजाओं को उतारते ही रहते हैं। पंचायती राज्य हो जाता हैं। जब प्रजा का राज्य हो तब तो आपस में लड़े, झगड़े। स्वराज्य तो वास्तव में है नहीं। जब से शुरू हुआ हैं झगड़े ही झगड़े होते रहते हैं। किंग-क्वीन का इतना नाम नहीं हैं। बाकी जो थोड़े हैं वह भी न रहेंगे। पंचायती राज्य जोर होता जाता हैं। यह भी समझते हो सब कौड़व हैं। धर्म आद को कुछ भी मानते नहीं। कौड़व सब को कहेंगे। क्योंकि पंचायती राज्य सब जगह हैं। अमेरिका, रशिया आद भी कांग्रेस हैं ना। बाकी जो कम ताकत वाले हैं वह भी ऐसे हो जवेंगे। फ्रांस में भी किंग नहीं हैं। बाकी एक इंगलैंड में भी किंग-क्वीन हैं। आजकल तो हंगामा सब जगह हैं। तुम जानते हो अब असुरों का राज्य खतम होने वाला हैं। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तुम सब को रास्ता बताते हो। बाप कहते हे मामेकं याद करो। बाप की याद में रहो औरों को भी समझाना हैं देहीअभिमानी बनो। देह का अभिमान छोड़ो। ऐसे नहीं कि तुम्हारे में सब देही अभिमानी बने हैं। नहीं। बनने का हैं। तुम पुरुषार्थ करते हो औरों को कराते हो। याद करने की कोशिश करते हैं फिर भूल जाते हैं। पुरुषार्थ यही करना हैं।

मूल बात हैं बाप को याद करना। बच्चों को कितना समझाते हैं। नालेज बहुत अच्छी मिली हैं। मूल बात हैं पवित्र रहना। बाप पावन बनाने आये हैं तो फिर पतित नहीं बनना हैं। याद से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यह भूलना न हैं। माया इस में ही विघ्न डाल भूला देती हैं। रात-दिन यही तात रहें हम बाप को याद कर सतोप्रधान बने। याद ऐसी पक्की होनी चाहिए जो पिछाड़ी सिवाय एक बाप के और कोई याद न पड़े। प्रदर्शनी में भी पहले2 यह समझाना चाहिए हैं यह हैं सब का बाप ऊंच ते ऊंच भगवान। उनको ही भिटी में मिला दिया हैं। कह देते हैं ठीकरभीतर सब में परमात्मा हैं। माया ने मनुष्यों की बुधि ऐसी तमोप्रधान कर दी हैं। पतित-पावन बाप को मिटटी में मिला दिया हैं। तो पावन बनाने आवेंगे कैसे। पहले2 शिव बाबा की चित्र पर समझाना चाहिए। सब का बाप पतित-पावन सर्व का सदगति दाता यह है। यही स्वर्ग का रचता हैं। अभी तुम बच्चे जानते होबाप आते ही है संगम युग पर। बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। सन्यासी सिखला न सके। पतित-पावन एक के सिवाय दूसरा कोई कोई हो नहीं सकता। पहले2 तो बाप का परिचय देना पड़ता हैं। अब एक एक को ऐसे चित्र पर बैठ समझाओ तो इतनी रश को कैसे समझा सकेंगे। परन्तु पहले2 बाप के चित्र पर समझाना मुख्य हैं। दो तीन जगह यह चित्र रखा हो। अंग्रेजी, हिन्दी दोनो हो। आजकल तो इंगलिश आन्दोलन बहुत चल रहा हैं। बोर्ड आद भी तोड़ने में देरी नहीं करते। फिर तुम कर ही क्या सकते हो। म्युजियम के लिए भी बाबा ने लिखा था हिन्दी-अंग्रेजी दोनो सेट बनाओ। परन्तु अपनी मत भी होती हैं ना। तुम्हारे पास आवेंगे तो सब ना। स्टुडेन्ट देखेंगे तो अंग्रेजी को उड़ाये देंगे। समझाना पड़ता हैं। क्योंकि हैं सब असुरी बन्दर सम्प्रदाय। पुजारी भक्त भी नहीं हैं। ज्ञान और भक्ति की बात भी नहीं सुनते। भक्ति हैं अथाह। ज्ञानतो हैं एक। बाप कितनी युक्तियां बच्चों को बताते रहते हैं। पतित-पावन एक बाप हैं। रास्ता भी वे ही बताते हैं। गीता कब सुनाई यह भी किसको पता नहीं। दवापर युग को कोई संगम युग नहीं कहा जाता है। संगम युगे2 तो बाप ही ~~[illegible]~~

समझाया जाये। बाप को डायरेक्शन देनी पड़ती हैं। आगे तो बाहर जाते थे अभी तो बाहर ही नहीं जाते। टेप पर भी पूरी मुरलीसुन सकते हैं। कोई2 बोलते हैं आप दवारा हम सुन रहे हैं क्यों नहीं हम बाप से डायरेक्ट जाये सुनें। बोलो बाबा की मुरलीयहां भी बैठ सुनो। टेप में तो एक्युरेट आती हैं ना। बच्चों को टेप से भी सुनने में पेट नहीं भरता हैं। इसलिए सम्मुख अते हैं। बच्चों को बहुत सर्विस करनी हैं। रास्ता बताना हैं। प्रदर्शनी में आते हैं अच्छा2 भीबहुत कहते हैं फिर बाहर जाने से माया के वायुमण्डल में सब उड़ जाता हैं। सुमिरण नहीं करते। उनकी फिर पीठ करनी चाहिए। बाहर जाने से माया खेंच लेती हैं। गोरख धंधों में लग जाते हैं। इसलिए मधुबन का गायन हैं। वहां जो मधुबन दिखाते हैं उस में कुछ भी रखा नहीं हैं। तुमको तो अब समझ मिली हैं। तुम वहां भी जाकर समझावेंगे गीता का भगवान कौन हैं। आगे तो तुम भी ऐसे ही जाकर माथा झुकाते थे। अभी तो तुम बदल गये हो। भक्ति छोड़ दी हैं। तुम अभी असुर से देवता बन रहे हो। बुधि में नालेज हैं। और क्या जाने प्रजापिता ब्रहमा कुमारियां कौन हैं। तुम समझाते हो वास्तव में तुम भी प्रजापिता ब्रहमाकुमार हो। इस समय ही ब्रहमा दवारा स्थापना हो रही हैं। ब्राहमण कुल भी जरुर चाहिए ना। संगम पर ही ब्राहमण कुल होता हैं। आगे ब्राहमणों की चोटी मशहुर थी। चोटी से या जनेव से पहचानते थे कि यह हिन्दु हैं। अब तो वह निशानियां भी चली गई हैं। अब तो तुम जानते हो हम ब्राहमण हैं। ब्राहमण बनने बाद ही फिर देवता बन सकते हैं। ब्राहमणों ने ही नई दुनिया की स्थापना की हैं। योगबल से सतोप्रधान बन रहे हैं। अपनी जांच रखनी हैं। कोई भी आसुरी गुण न हो। लुण पानी न बनना हैं। यह तो यज्ञ हैं ना। यज्ञ से सब सम्भाल होती रहती हैं। यज्ञ मेंसम्भालने वाले ट्रस्टी भी रहते हैं। यज्ञ का मालिक तो हैं शिव बाबा। यह ब्रहमा भी ट्रस्टी हैं। यज्ञ की सम्भाल करनी होती हैं।

भामा-बाबा दोनो ट्रस्टी हैं। आगे लिख कर देते थे हमको यह यह चाहिए। ऐसे तो नहीं हरेक गोदाम में घूस पड़ेंगे। ट्रस्टी से पूछ कर चीज़ लेनी चाहिए। बिगर पूछे अन्दर घूस कर चीज़ उठावे, यह तो चोरी हो गई। क्योंकि ट्रस्टी से न पूछा। ट्रस्टी बैठा है वह सब प्रबन्ध देते हैं। पूछे बिगर उठाना चोरी हो गई। उन जैसा चोर दुनिया में और कोई नहीं। शिव बाबा का यज्ञ है। इसके ट्रस्टी भी होंगे ना। यह उनका तन सब से जास्ती ट्रस्टी हैं। यह कहते हैं मैं फिर मामा को मुकरर रखता हूं। भामा नहीं है तो कोई को मुकरर करते हैं। दीदी मुकरर हैं। वह ट्रस्टी हैं। हर बात में पूछना हैं। नहीं तो कब का चोर सो लख का चोर हो जाता है। यज्ञ की कब की चोरी जैसे कि लाखों की हो गई। अन्दर खाता तो है ना। हम बिगर पूछे यह काम करते हैं। बाप समझानी देते हैं ऐसे काम न करो। नहीं तो फिर पद भी ऐसा पायेंगे। बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। यज्ञ के कायदे भी हैं ना। दुनिया में तो कोई भी कायदा कानून हैं नहीं। ईश्वरीय कायदे में न रहने से फिर पद भीकम हो जाता हैं। बाप सावधान करते रहते हैं ईश्वरीय कायदे पर चलो। कोई पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई चोरी का लाखों को हो जाता हैं। सब कायदे बाप समझाये देते हैं। ईश्वर का राईट हैंड धर्मराज हैं। यह हिसाब-किताब ओटोमेटकली चलता ही रहता हैं। जो जैसा कर्म करते हैं वैसा फल भोगते हैं। ड्रामा में नुंध हैं। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आद कुछ भी चाहिए तो शिव बाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो याद आ आवेंगे। तुम्हारा नुकसान हो जावेंगा। इस में लाईन बहुत क्लीयर होनी चाहिए। अभी हम वापस जा रहे हैं। थोड़ा समय हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगर जाये। आये तो हैं तकदीर खाने। परन्तु तकदीर पलटती हैं तो एक दम खतम हो जाते हैं। कितने भट्ठी में थे। फिर कितने चले गये। तकदीर को लकीर लगाये ना। समझाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती हैं। तुम्हारा समझाते2 गला ही घूंट जाता हैं। मनुष्य [redacted] थोड़े ही जावेंगे। जानते हो यह जिस्मानी यात्रा हैं। यह हैं रूहानी यात्रा। यह आत्मा की यात्रा हैं। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप इस योग अग्नि से कट जावेंगे। कोई भी मनुष्य मात्र यह यात्रा सिखलाये न सके। बाप ही कहते हैं देह के सर्व सम्बन्ध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। विचार चलती हैं कोई आवे तो उनको कैसे समझावें। भारतवासियों को ही समझाना पड़ता हैं। सब थोड़े ही ज्ञान उठावेंगे। 84 जन्मनहीं समझते हैं तो समझो देवी देवता धर्म के नहीं हैं। दूसरे कोई धर्म के होंगे। बाप ने अच्छी रीत सब समझाया हैं। जिसने जास्ती भक्ति की हैं वह ही जास्ती ज्ञान उठावेंगे। आगे चल कर तुमको सब अच्छे2 प्रबन्ध आपे ही मिलेंगे। कहेंगे हमारे घर में यह प्रदर्शनी आद खोलो। करोड़पति, पदमपति तुमको कहेंगे इस मकान में आप सर्विस करो। दिल होगी क्यों नहीं इस सेवा में पैसे लगावें। ऐसा जब समय होगा तब बाबा नीचे उतरेंगे। बाकी यह तो जैसे और मनुष्य कैंची से काटते हैं बाबा भी ऐसा करेंगे क्या। वह भी समय आवेंगा जब कि सब तुमको कहेंगे यह सब आप का हैं। उमंग से कहेंगे। पहले तो गरीबों का ही होता हैं। उनका ले लेते हैं। बाकी कोई पिछाड़ी में कहेंगे लाख लो। नहीं लेंगे। पैसे की दरकार ही नहीं। यह तुम घर में जाकर रखो। सिर्फ रहने का प्रबन्ध दो। आगे चल देखना क्या होता हैं। तुम कहेंगे मकान भी तुम्हारे नाम पर हो। हम सिर्फ सर्विस करते हैं। शिव बाबा शराफ हैं पक्का। यह भी सिखता रहता हैं। शिव बाबा कहते हैं हम लेकर क्या करेंगे। मैं अगर किसको चाहूं तो तकदीर बनाऊं, चाहूं तो न भी बनाऊं। हमको इतना धन आद तो चाहिए नहीं। ऐसे थोड़े ही सन्यासियों सिखल लेते ही रहेंगे। उन्हों के तो गदी पर बैठते हैं। फिर पैसे आद का कितना झगड़ा होता हैं। बाप आते ही हैं सारी दुनिया से झगड़ा खतम करने। अच्छा मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। अच्छा नमस्ते भी सुने। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

अच्छा, आज गुरुवार के दिन मधुवन निवासियों का बहुत2 याद प्यार स्वीकार करना जी। अच्छा अब विदाई।

-: *** ओमशान्ति *** :-